आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-25, अंक-5 मई 2011

इस अंक में

- क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, बेलगांव: हर्बल चिकित्सा पर शोधरत 33
- विकृतिविज्ञान संस्थान-नाम परिवर्तन समारोह एवं संस्थापना दिवस व्याख्यान 39
- परिषद के समाचार 39

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ विश्व मोहन कटोच
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद
एवं सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

सदस्य — डॉ बेला शाह

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — डॉ के. सत्यनारायण

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
डॉ रजनी कान्त

प्रकाशक — श्री जगदीश नारायण माथुर

आई सी एम आर शताब्दी वर्ष पर विशेष

क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, बेलगांव: हर्बल चिकित्सा पर शोधरत

बेलगांव स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) परिवार का सबसे नया संस्थान है। इस केन्द्र को हर्बल दवाइयों पर शोध करने की जिम्मेदारी दी गई है, साथ में स्थानीय लोगों की स्वास्थ्य समस्याओं पर भी कार्य करना इस केन्द्र का लक्ष्य है। भारत के पश्चिमी घाट्स (वेस्टर्न घाट्स) की तराइयों में बेलगांव स्थित यह केन्द्र जैवविविधता के लिए विश्व विख्यात 32 महत्वपूर्ण स्थानों में एक है। पश्चिमी घाट्स के निकट होने के कारण इस केन्द्र को इस क्षेत्र के औषधीय पादपों की सम्पदा के साथ-साथ पारम्परिक हर्बल हीलिंग की विविध संस्कृति पर कार्य करने के सुव्यवस्थित अवसर प्राप्त हैं।

इस केन्द्र को इस क्षेत्र में जैवआयुर्विज्ञानी शोध कार्य हेतु विशेषज्ञता, मूल ढांचा और प्रौद्योगिकियों के संदर्भ में एक संसाधन केन्द्र के रूप में भी माना जा रहा है। इस केन्द्र का उद्देश्य पारम्परिक और आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के बीच के अन्तराल को कम करना है जिससे हर्बल दवाइयों के माध्यम से सस्ती और उत्तम स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा सकें। इस केन्द्र के वैज्ञानिक हर्बल चिकित्सा के जिन विभिन्न पहलुओं पर कार्यरत हैं उनमें सम्मिलित हैं -स्थानीय पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों/औषधीय पादपों का प्रलेखन तथा उनकी प्रभावकारिता, सुरक्षा एवं कार्यविधि की वैज्ञानिक वैधता को स्थापित करना; औषधीय पादपों/पादपीय घटकों को प्राप्त करना, उनका शोधन करना तथा उनकी विशेषता ज्ञात करना; औषधीय पादपों की कीमोप्रोफाइलिंग एवं जीनोटाइपिंग; महत्वपूर्ण औषधीय पादपों की पहचान करने हेतु रासायनिक और आण्विक चिन्हकों का विकास; महत्वपूर्ण पादप जातियों के जर्म प्लाज्म का संरक्षण एवं प्रवर्धन, आदि। यह केन्द्र महत्वपूर्ण स्थानीय रोगों तथा उनके कारणों और उनकी व्यापकता स्थिति को ज्ञात करने पर भी कार्यरत है। समाज को लाभान्वित करने की दिशा में इस केन्द्र द्वारा इस क्षेत्र में हर्बल चिकित्सा के विषय में जागरूकता उत्पन्न करने, वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने, वैज्ञानिक सूचना का प्रसार करने के साथ-साथ मानव संसाधन विकास पर भी कार्य किए जा रहे हैं।

सूत्रपात

छठी पंचवर्षीय योजना अवधि (1980-85) के दौरान आई सी एम आर के अन्तर्गत क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्रों (RMRC$_s$) के स्थापित किए जाने की संकल्पना की गई। आई सी एम आर के शासी निकास ने 2 मई, 1980 को संपन्न अपनी 50वीं बैठक में बंगलौर में एक क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र स्थापित करने की सैद्धान्तिक मंजूरी दी (जिसे बाद में बेलगांव स्थानांतरित किया गया)। कर्नाटक सरकार द्वारा वर्ष 1984 में

20 मई, 2006 को केन्द्र का औपचारिक उद्घाटन

20 मई, 2006 को अतिथिगृह का उद्घाटन

20 मई, 2006 को औषधीय पादपों के म्युजियम का उद्घाटन

कार्यालय भवन, वर्ष 2011

केन्द्र के स्टाफः जनवरी, 2011

बेलगांव में आई सी एम आर को 20 एकड़ भूमि का आबंटन किया गया। क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (आर एम आर सी), बेलगांव की दूरदर्शिता एक प्रमुख प्राथमिकता वाले क्षेत्र के रूप में हर्बल दवाइयों पर शोध कार्य करने की थी । वर्ष 2000 में कुछ आवासीय भवनों के निर्माण के अलावा वर्ष 2003 तक इस केन्द्र का कोई स्वरूप नहीं बन पाया, जब चेन्नई स्थित यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र से एक शोध सहायक (रिसर्च असिस्टैंट) के रूप में प्रथम स्टाफ को बेलगांव स्थानांतरित किया गया । उसके पश्चात मार्च, 2003 में प्रभारी-अधिकारी की नियुक्ति की गई और परिषद द्वारा संविदा (कान्ट्रैक्ट) आधार पर कुछ अस्थाई स्टाफ प्रदान किए गए । प्रथम चरण में बिजली, टेलीफोन, पानी, सड़कें जैसी मूल ढांचागत सुविधाएं स्थापित की गईं । एक आवासीय भवन को अस्थाई प्रयोगशाला-एवं-कार्यालय के रूप में बदल कर उसमें केन्द्र के शोध कार्यों की शुरुआत की गई । परिषद के तत्कालीन महानिदेशक प्रो. निर्मल कुमार गांगुली द्वारा दिनांक 20 मई, 2006 को इस केन्द्र का औपचारिक रूप से उद्घाटन किया गया । वर्तमान में इस केन्द्र में 3 वैज्ञानिकों, 2 तकनीकी सहायकों, एक पैरा मेडिकल कर्मचारी, एक वरिष्ठ श्रेणी लिपिक और एक जन्तु परिचारक (एनीमल अटेंडेण्ट) के रूप में सीमित स्टाफ की उपस्थिति में इस केन्द्र ने बहुत कम अवधि में अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं । पश्चिमी घाट्स के औषधीय पादपों हेतु एक हर्बल उद्यान और म्युज़ियम, आधुनिकतम उपकरणों सहित पादपरसायन और आण्विक जैविकी प्रयोगशालाओं, ऊतक एवं कोशिका संवर्धन प्रयोगशालाओं और जंतु प्रयोग सुविधाओं की स्थापना की गई है।

अनुसंधान के प्राथमिकता वाले क्षेत्र

इस केन्द्र की प्राथमिकता चयापचयज एवं यकृत विकारों जैसे प्रमुख रोगों के निवारण एवं इलाज हेतु हर्बल दवाइयां विकसित करने, तथा व्रण (अल्सर), आंत्र रोगों, आदि के लिए स्वास्थ्य अनुसंधान हेतु एक प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप कार्य करने की है। वर्तमान में अनुसंधान के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में सम्मिलित हैं :

- स्थानीय पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों/औषधीय पादपों का प्रलेखन।
- हर्बल दवाइयों की प्रभावकारिता, सुरक्षा और कार्यविधि के संदर्भ में वैज्ञानिक वैधता स्थापित करना ।
- औषधीय पादपों/पादप घटकों का निष्कर्षण, शोधन, लक्षण वर्णन और भैषजिक परीक्षण ।
- औषधीय पादपों की कीमोप्रोफाइलिंग और जीनोटाइपिंग ।
- औषधीय पादपों की पहचान हेतु रासायनिक और आण्विक चिन्हकों का विकास ।
- महत्वपूर्ण जातियों के जर्म प्लाज्म का संरक्षण एवं प्रवर्धन ।
- क्षेत्रीय स्तर के स्थानीय महत्व के रोगों पर अनुसंधान तथा उनकी हेतुकी और उपस्थिति को ज्ञात करना।

शोध गतिविधियां

इथनोमेडिसिन : प्रलेखन से वैधीकरण

औषधीय पादपों पर सर्वेक्षण तथा पश्चिमी घाट्स के इथनोमेडिसिनल पादपों पर डाटाबेस की रचना

वर्ष 2005 में आई सी एम आर द्वारा इस केन्द्र को पश्चिमी घाट्स के औषधीय पादपों पर सर्वेक्षण हेतु बहुकेन्द्रीय परियोजना की एक समन्वयक यूनिट के रूप में नामित किया गया, जिसके दौरान पूरे पश्चिमी घाट्स क्षेत्र के औषधीय पादपों पर विस्तृत सूचना एकत्र की गई । तमिल नाडु, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल और गोवा स्थित 5 सहयोगी केन्द्रों द्वारा आंकड़े तैयार किए गए । कुल मिलाकर पश्चिमी घाट्स क्षेत्र से स्थानीय पारम्परिक चिकित्सकों द्वारा प्रयुक्त 500 औषधीय पादपों पर सूचना एकत्रित की गई जिससे एक डाटाबेस तैयार किया जा सके । प्रत्येक पादप से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान की गई जैसे कि पादप का वानस्पतिक नाम, समानार्थक नाम, स्थानीय नाम, वर्णन, पारम्परिक चिकित्सक द्वारा पादप के प्रयोग किए जाने वाले भाग का नाम, औषधीय प्रयोग उत्पाद (फॉर्मुलेशन) और वितरण । इसके अलावा संबद्ध साहित्य के गहन अध्ययन के आधार पर रासायनिक संघटन, भेषजगुणविज्ञान/विषविज्ञान तथा चिकित्सीय परीक्षणों, यदि कोई हो, पर उपलब्ध सूचना भी सम्मिलित की गई । इस डाटाबेस को ऐसे तैयार किया गया है जिसे जनसाधारण, छात्रों, शिक्षाविदों (एकेडमीशियंस), पारम्परिक चिकित्सकों और वैज्ञानिक समुदाय द्वारा आसानी से प्रयोग किया जा सकता है । इस डाटाबेस को सी डी रूप में पब्लिक डुमेन में उपलब्ध कराया गया है। डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग और महानिदेशक, आई सी एम आर ने दिनांक 4 सितम्बर, 2009 को इस सी डी का विमोचन किया गया ।

डाटाबेस की संरचना

डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर द्वारा (बाएं से द्वितीय) डाटाबेस सी डी का विमोचन

पश्चिमी घाट्स क्षेत्र के औषधीय पादपों हेतु हर्बल उद्यान

भारत का पश्चिमी घाट्स क्षेत्र पारिस्थितिक दृष्टिकोण से विश्व में अत्यन्त समृद्धि वाले क्षेत्रों में सम्मिलित है और इसे जैवविविधता के लिए विश्व के सुविख्यात 34 क्षेत्रों में एक के रूप में माना जाता है। इस क्षेत्र में पादपों की लगभग 4000 जातियों (स्पीसीज़) की उपस्थिति बताई जाती है । उच्च औषधीय मूल्यों सहित पादपों के अति दोहन के कारण अनेक पादपों की उपस्थिति दुर्लभ होती जा रही है । इसलिए, हर्बल दवाइयों की हमारी पारम्परिक धरोहर के महत्व और औषधीय पादपों एवं उनके संरक्षण के महत्व के विषय में जन साधारण में जागरूकता उत्पन्न करने की आवश्यकता है । इस पहल के अंतर्गत इस क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र में पश्चिमी घाट्स क्षेत्र के औषधीय पादपों हेतु एक हर्बल उद्यान (हर्बल गार्डन) की स्थापना की गई है ।

हर्बल उद्यान का विशालदर्शी दृश्य

अभी तक इस उद्यान में कुल मिलाकर 364 औषधीय पौधे लगाए गए हैं । उनमें 32 पौधों की उपस्थिति पश्चिमी घाट्स क्षेत्र में दर्ज की गई है, जबकि 17 पादप जातियों को आई यू सी एन-2007 द्वारा रेड लिस्टेड के रूप में वर्गीकृत किया गया है । पौधों से संबंधित प्राथमिक जानकारी उसी स्थान पर साइनबोर्ड के माध्यम से दी गई है। इस केन्द्र में सूचना, शिक्षा एवं संचार (आई ई सी) की एक सुविकसित प्रणाली कार्यरत है और आयुर्वेद, पारम्परिक चिकित्सा, फार्मास्युटिकल्स, हर्बल अनुसंधान जैसी विभिन्न पृष्ठभूमि से जुड़े सदस्यों के साथ-साथ शिक्षक, छात्र, शोधकर्ता तथा हर्बल चिकित्सक इस उद्यान को देखने आते हैं । संबंधित सूचना उपलब्ध कराने हेतु विभिन्न प्रकार के ब्रोशर और पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया गया है । इस उद्यान में आने वाले आगंतुकों में जागरूकता भी उत्पन्न की जा रही है । यह पश्चिमी घाट्स क्षेत्र में औषधीय पादपों के जीन पूल रिपॉज़िटरी (जीन पूल भण्डारण) के रूप में कार्यरत है ।

पश्चिमी घाट्स के इथनोमेडिसिनल पादपों का संग्रहालय

हर्बल दवाइयों के प्रति घटती रुचि एवं उनके अति दोहन के कारण औषधीय पौधों की सम्पदा और उनकी जानकारी दिन-प्रति-दिन कम होती जा रही है । पश्चिमी घाट्स के औषधीय पादपों पर पूर्ण जानकारी किसी एक स्थान पर उपलब्ध नहीं है । पश्चिमी घाट्स की औषधीय पादप सम्पदा को समर्पित इस संग्रहालय की स्थापना इस कमी को पूरा करने की दिशा में एक कदम है ।

संग्रहालय का दृश्य

औषधीय पादपों की कुल 265 जातियों के 710 से अधिक चित्र (फोटोग्राफ्स) एकत्र किए गए हैं जिनमें अधिकांश को इस संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है । इस क्षेत्र के औषधीय पादपों का एक हरबेरियम भी विकसित किया गया है। सचित्र वैज्ञानिक चार्टों के माध्यम से पारम्परिक चिकित्सा की विभिन्न शाखाओं को भी प्रदर्शित किया गया है जिनमें सम्मिलित हैं - आयुर्वेद और सिद्ध (भारतीय चिकित्सा पद्धतियां) जैसी पारम्परिक चिकित्सा, आधुनिक चिकित्सा, भेषजगुणविज्ञान, आदि ।

पांच सौ से अधिक नमूनों सहित एक क्रूड ड्रग रिपॉज़िटरी इस क्षेत्र में अशोधित (क्रूड) औषधियों और औषधीय पादपों के प्रमाणीकरण का संदर्भ केन्द्र है । एकत्रित अधिकांश सूचना को डिजिटल फॉर्मेट में सुरक्षित रखा गया है । सभी हरबेरियम को स्कैन करके इलेक्ट्रॉनिक रूप में एकत्रित किया जाता है जो एक *डिजिटल हरबेरिया* के रूप में कार्यरत है । इस संग्रहालय में दो मल्टीमीडिया कियोस्क्स हैं जो आगंतुकों को पश्चिमी घाट्स के औषधीय पादपों पर टच स्क्रीन सूचना प्रदान करते हैं। विभिन्न पृष्ठ-भूमि और प्रोफेशन के लोग इस संग्रहालय में नियमित रूप से आते हैं । यह संग्रहालय इस क्षेत्र में औषधीय पादपों और पारम्परिक चिकित्सा हेतु सूचना, शिक्षा एवं संचार केन्द्र के रूप में कार्यरत है ।

स्थानीय स्वास्थ्य परम्पराओं को पुनः सक्रिय बनाना

इस केन्द्र द्वारा ग्रामीण समुदाय में स्वास्थ्य संबंधी प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए सस्ती और स्वतः जारी रखने वाली नीति को बढ़ावा देने तथा हर्बल क्षेत्र में प्रमुख उपलब्धियों का मूल्यांकन करने हेतु एक अध्ययन की शुरुआत की गई । यह अध्ययन एक स्थानीय गैर सरकारी संगठन अर्थात एन जी ओ (बेलगांव एकीकृत ग्रामीण विकास सोसाइटी, BIRDS, टुक्कानट्टी) और एक आयुर्वेदिक अस्पताल (बी.एम.के. आयुर्वेद महाविद्यालय, बेलगांव) के सहयोग में किया जा रहा है। इस अध्ययन के लिए बेलगांव जिले के दो खण्डों (ब्लॉक्स/तालुका) यथा- गोकक और हुक्केरी का चयन किया गया । इस क्षेत्र की प्राथमिकता वाली स्थितियों को प्रलेखित किया गया । इन स्थितियों के लिए पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों का भी प्रलेखन किया गया। प्रथम प्रावस्था में, बेलगांव स्थित जे.एन. मेडिकल कॉलेज के सहयोग में विषविज्ञानी और भैषजिक मूल्यांकन हेतु संधिशोथ, कब्ज, पेट में दर्द और अल्सर जैसी चार प्राथमिकता वाली स्थितियों के लिए चिकित्सा विधियों पर अध्ययन किया गया । द्वितीय प्रावस्था के दौरान ज्वर के लिए पारम्परिक चिकित्सा विधि का चयन किया गया ।

संधिशोथ रोधी-क्रियाशीलता के लिए चयनित चिकित्सा विधियां शोथ को कम करने में प्रभावी तथा बाह्य प्रयोग के लिए सुरक्षित पाई गईं । उनमें महत्वपूर्ण संधिशोथ रोधी क्रियाशीलता भी देखी गई । कब्ज के लिए चयनित उत्पाद में महत्वपूर्ण मृदुविरेचक (लैक्ज़ेटिव) तथा नीम जैसे एक घटक में जठर संरक्षी क्रियाशीलता देखी गई । पेट दर्द में प्रयुक्त पारम्परिक औषधि की ऐंठन रोधी क्रियाशीलता का मूल्यांकन किया गया और वह हिस्टामिनिक रोधी और कोलिनोमाइमेटिक (कोलीन अनुकारी) पाई गई । इससे जठरशोथ, अपच और अंतरांग पीड़ा के कारणों से उत्पन्न पेट दर्द से भी आराम मिला । व्रण रोधी क्रियाशीलता के लिए एक अन्य उत्पाद का मूल्यांकन करने से भी मानक औषधियों के समान आशाजनक परिणाम मिले । ज्वर के इलाज में प्रयुक्त उत्पादों से भी अनुकूल परिणाम मिले । क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान

अनुसंधान केन्द्र, बेलगांव द्वारा अभी तक स्थानीय रूप से प्रयुक्त जितनी स्वास्थ्य विधियों का अध्ययन किया गया उनमें कई औषधियां सुरक्षित और प्रभावी पाई गईं, जिन्हें प्राथमिक स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु समुदाय में प्रचारित किया जा सकता है ।

बेलगांव स्थित बी.एम.के. आयुर्वेद कॉलेज द्वारा एक चयनित चिकित्सा विधि की संधिशोथ रोधी क्रियाशीलता का सीमित चिकित्सीय मूल्यांकन किया जा रहा है जिसके आशाजनक परिणाम मिल रहे हैं ।

परिचालन अनुसंधान - समुदाय की आवाज़

बेलगांव क्षेत्र में पारम्परिक दवाइयों/उत्पादों के प्रयोग, उनकी उपलब्धता और उपयोगिता पर सर्वेक्षण

यह केन्द्र हर्बल दवाइयों के विभिन्न सहभागियों के साथ व्यापक रूप से कार्यरत है । इस क्षेत्र में हर्बल प्रयोग की वर्तमान स्थिति की पहचान करने के एक प्रयास में बेलगांव जिले के आयुर्वेदिक प्रणाली के चिकित्सकों के साथ-साथ पारम्परिक चिकित्सा पद्धति से इलाज करने वाले व्यक्तियों को सम्मिलित करते हुए अध्ययन किया गया ।

यह देखा गया कि लगभग 60% आयुर्वेदिक चिकित्सक केवल आयुर्वेदिक पद्धति से ही इलाज करते है जबकि 40% चिकित्सक अन्य चिकित्सा पद्धतियों से भी इलाज करते हैं । यह भी देखा गया कि 44% चिकित्सक स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों से स्वयं दवाइयां तैयार करते हैं। इस सर्वेक्षण से पता चला कि लगभग 69% पारम्परिक चिकित्सक (नॉन-कोडीफाइड) इस पद्धति का ज्ञान अपने पूर्वजों से अर्जित किया । यह उत्साहजनक था कि 58% पारम्परिक चिकित्सक अपना ज्ञान अन्य व्यक्तियों को देने के लिए तैयार हैं ।

इस अध्ययन में 56 कुल (फेमिलीज़) के 115 ऐसे औषधीय पौधों के प्रयोग को दर्ज किया गया जिन्हें पारम्परिक चिकित्सक 71 प्रकार के रोगों के इलाज हेतु प्रयोग करते हैं । इनमें से कई एकल पादप से निर्मित उत्पाद थे । कुल 66% पादपों का प्रयोग मुखीय विधि से किया गया जबकि 34% का प्रयोग बाह्य रूप में किया गया । कुल मिलाकर, इस अध्ययन से इस क्षेत्र में पारम्परिक चिकित्सा प्रणाली की स्थिति पर बेसलाइन आंकड़े प्राप्त हुए ।

द्वितीय चरण के अन्तर्गत, बेलगांव क्षेत्र में पारम्परिक चिकित्सकों की सेवाएं लेने वाले रोगियों की जनांकिकी (डेमोग्राफी) पर जारी अध्ययन प्रगति पर हैं । यह हर्बल औषध-विकास के क्षेत्र में भावी अनुसंधान के लिए उपलब्धियों की पहचान करने के उद्देश्य से रोगियों के विस्तृत विवरण और उनके दृष्टिकोण को प्रलेखित करने का एक प्रयास है ।

बेलगांव क्षेत्र में रोग सर्वेक्षण - अस्पताल पर आधारित एक अध्ययन

इस केन्द्र द्वारा स्थानीय रूप से व्याप्त रोगों पर बेसलाइन आंकड़े तैयार करने के लिए अस्पताल पर आधारित एक अध्ययन किया गया । यह अध्ययन के. एल. ई. एस. अस्पताल और जिला सिविल अस्पताल बेलगांव के सहयोग में किया गया । वर्ष 2001 से 2004 के दौरान अस्पताल के रिकॉर्ड्स का मूल्यांकन किया गया । दर्ज किए गए विभिन्न रोगों को अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकीय वर्गीकरण के अनुरूप कोड्स के रूप में वर्गीकृत किया गया । के. एल. ई. एस. अस्पताल से प्राप्त आंकड़ों से संकेत मिला कि रक्त वाहिका प्रणाली से जुड़े रोगों की संख्या अधिकतम (20%) थी, जबकि जिला सिविल अस्पताल में कुछ संक्रामक/परजीवी रोगों की संख्या अधिकतम (11.1%) थी । इसके अतिरिक्त, इस अध्ययन को वर्ष 2001 से 2004 के दौरान अस्पताल के डिस्चार्ज रिकॉर्ड्स के आधार पर जिला सिविल अस्पताल, बेलगांव की अस्पताल सेवाओं पर संक्रामक रोगों के भार के मूल्यांकन के लिए भी विस्तारित किया गया । परिणामों से संकेत मिला कि अस्पताल में संक्रामक रोगों के अन्तर्गत पांच उपवर्गों का रोगभार 93% है । आंत्रीय संक्रमण से जुड़े रोगों और क्षयरोग की उपस्थिति सर्वाधिक (क्रमशः (44% और 35%) थी । आंत्रीय संक्रामक रोगों में अतिसार और जठरांत्ररोग की उपस्थिति 83% थी । इसके अतिरिक्त, 0-4 वर्षीय बच्चे मुख्यतया आंत्रीय संक्रमणों के कारण अस्पताल में भर्ती हुए थे । इस अध्ययन से संकेत मिलता है कि सफाई के उपयुक्त उपायों, उपयुक्त पेय जल की आपूर्ति और डॉट्स के विषय में उपयुक्त जागरूकता के परिणामस्वरूप अस्पताल में भरती होने वाले रोगियों की संख्या में गिरावट लाई जा सकती है । इस अध्ययन से स्थानीय रूप से व्याप्त महत्वपूर्ण रोगों पर अध्ययन की शुरुआत करने का आधार तैयार हुआ।

एच आई वी और संबद्ध पहलुओं पर अध्ययन

यह केन्द्र परिषद के पुणे स्थित राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान के सहयोग में समुदाय में एच आई वी से जुड़े पहलुओं पर कार्य कर रहा है । गोवा और बेलगांव में एच आई वी सेवाओं के वितरण, उपलब्धता और उपयोग को ज्ञात करने पर संपन्न अध्ययन से इस क्षेत्र में एच आई वी चिकित्सा से संबद्ध सेवा की स्थिति को ज्ञात करने तथा एच आई वी ग्रस्त रोगियों के लिए बेहतर चिकित्सा प्रदान करने में आने वाली समस्याओं को ज्ञात करने में मदद मिली है । *''बेसिक एच आई वी सर्विसेज़ अवेलएबिलिटी ऐट बेलगांव''* शीर्षक से एक पुस्तिका प्रकाशित की गई है और चिकित्सकों के लिए एक कार्यशाला भी आयोजित की गई ।

परिषद द्वारा 'भारत में पुरुष नियंत्रित जैविक विकल्प पर समुदाय और स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदानकर्ता के दृष्टिकोण को समझने' पर जारी एक बहुकेन्द्रीय टास्क फोर्स अध्ययन में यह केन्द्र भी एक सहभागी है । इस अध्ययन का उद्देश्य बेलगांव क्षेत्र में एच आई वी निवारक नीति के रूप में पुरुष खतना प्रक्रिया पर समुदायों और स्वास्थ्य सेवा प्रदानकर्ताओं के विचार से संबंधित आंकड़े तैयार करना है । इस अध्ययन से संकेत मिलता है कि कम से कम बेलगांव क्षेत्र में खतना प्रक्रिया अपनाए और इसे न अपनाने वाले समुदायों के बीच अलग-अलग विचार हैं। हालांकि, दोनों वर्गों के अधिकांश लोगों का मानना है कि इस क्षेत्र में एच आई वी के लिए निवारक नीति के रूप में पुरुष खतना प्रक्रिया को लागू करना एक बड़ा अवरोध हो सकता है।

प्राकृतिक उत्पाद रसायनः औषधीय पादपों के विषय में व्यावहारिक ज्ञान

पश्चिमी घाट्स के औषधीय एवं सगंध पादपों की कीमोप्रोफाइलिंग और जैविक क्रियाशीलता

इस केन्द्र के पादपरसायन (फाइटोकेमिस्ट्री) प्रभाग की स्थापना वर्ष 2008 में की गई । यह प्रभाग पश्चिमी घाट्स के औषधीय सगंध पादपों से प्राप्त प्रमुख सक्रिय घटकों की कीमोप्रोफाइलिंग और उनके अध्ययन के लिए पूरी तरह समर्पित है ।

पश्चिमी घाट्स से पारम्परिक रूप से प्रयुक्त महत्वपूर्ण औषधीय और सगंध पादपों के घटकों और संबंधित क्रियाओं का अध्ययन किया गया है । *सीलस एरोमैटिकस* बेंथ., *औसिमम बैसिलिकम* एल., *ऑसिमम ग्रैटीसिमम* एल., *ऑसिमम सैंक्टम* एल., *ऑसिमम किलिमैंड्सकैरिकम* शुल्ट., *फीरोनिया एलीफैंटम* कॉर., *वाइटेक्स नेगुण्डो* एल. और *सिट्सोक्लाइन परप्यूरिया* (बक-हैम) ओ. कट्ज़ नामक पादपों से वाष्पशील द्वितीयक चयापचयजों की पहचान की गई है। *सी. एरोमैटिक्स* में पहली बार मिथाइल चैवीकोल, α- कैलाकोरीन तथा α- कोरोकैलीन (कम मात्रा में) नामक तीन नए रसायनों के साथ उच्च मात्रा में कार्वाक्रोल की उपस्थिति प्रदर्शित की गई । इसी प्रकार, *वी. नेगुण्डो* और *सी. परप्यूरिया* के वाष्पशील तेलों में पहली बार डाइटरपींस और डाइटरपिनॉयड्स की उपस्थिति प्रदर्शित की गई ।

ऑसिमम पादप की विभिन्न जातियों की कीमोप्रोफाइलिंग (उपस्थित रसायनों की स्थिति) ज्ञात की गई जिसके अन्तर्गत उनके पादप घटकों की स्थितियों में स्पष्ट अन्तर देखे गए । उनमें यूजीनॉल, मिथाइल यूजीनॉल, मिथाइल चैवीकोल और कैम्फर (कपूर) की उपस्थिति उच्च मात्रा में पाई गई ।

एफ. एलीफैंटम और *सी. परप्युरिया* के वाष्पशील तेलों में उत्तम एंटीमाइक्रोबियल क्रियाशीलता प्रदर्शित की गई है। इसके अतिरिक्त, *एफ. एलीफैंटम* और *बम्बूसा एरूडिनेसिया* (रीट्ज़) विल्ड नामक दो पादपों की मधुमेह रोधी क्रियाशीलता का अध्ययन किया गया है । स्ट्रेप्टोज़ोटोसिन प्रेरित नर विस्टर चूहों पर इन दोनों पादपों से प्राप्त सत्वों की मधुमेह रोधी क्रियाशीलता प्रदर्शित की गई ।

आण्विक जैविकी - हर्बल औषधियों की विस्तृत जानकारी

औषधीय पादपों की आण्विक विशेषता

वर्ष 2009-2010 के दौरान इस केन्द्र में एक आण्विक जैविकी एवं जैवप्रौद्योगिकी प्रभाग की स्थापना की गई । इस प्रभाग की औषधीय पादपों की आण्विक जैविकी के साथ-साथ स्थानीय लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले रोगों पर शोध करने की दोहरी भूमिका है ।

इस प्रभाग ने डी एन ए चिन्हकों के प्रयोग के माध्यम से औषधीय पादपों की विशेषता ज्ञात करने के कार्य को भी हाथ में लिया है । *सरका अशोका* और *प्लम्बागो ज़ीलानिका* जैसे महत्वपूर्ण औषधीय पादपों के लिए विशिष्ट चिन्हकों का पता लगाने के लिए अध्ययनों की शुरुआत की गई है । चुने हुए महत्वपूर्ण औषधीय पादपों की एक डी एन ए रिपॉज़िटरी तैयार की गई है । जिससे उनका बाद में प्रयोग किया जा सके । ऊतकों पर हर्बल उत्पादों (दवाइयों) की क्रियाशीलता को ज्ञात करने के उद्देश्य से अंतःपात्र विधि से अध्ययनों की योजना तैयार की गई है । आने वाले वर्षों में हर्बल औषधियों की आण्विक कार्य प्रक्रिया का अध्ययन किया जाएगा ।

ऑसिमम जाति के पादप के बीजों और पत्तियों से पृथक किए गए डी एन ए की मात्रात्मक और गुणात्मक तुलना

सामान्यतः पी सी आर विधि से अध्ययन करने और बाद में किए जाने वाले प्रयोगों के लिए ताजी पत्तियों से डी एन ए को पृथक करने को वरीयता दी जाती है । पत्तियों के परिवहन तथा कार्य श्रृंखला से पूर्व बहुधा फ्रीज़र के माध्यम से कोल्ड चेन संरक्षण की आवश्यकता होती है । जीनोमिक डी एन ए के पृथक्करण के लिए वैकल्पिक नमूनों के रूप में बीजों की उपयुक्तता को ज्ञात करने के लिए *ऑसिमम* की तीन जातियों यथा-*ओ. सैंक्टम, औ. बैसिलिकम* और *ओ. ग्रैटीसिमम* में पत्तियों की तुलना में उनके बीजों का अध्ययन किया गया ।

ऑसिमम की इन तीनों जातियों के बीजों से तथा प्रत्येक के साथ 5 बार संपन्न प्रयोग से प्राप्त डी एन ए की मात्रा न केवल महत्वपूर्ण रूप से उच्च ($P \leq 0.05$) थी, बल्कि पत्तियों की तुलना में लगभग दोगुना थी । RAPD और ISSR फिंगरप्रिंटिंग आमापनों जैसी विधियों के साथ किए जाने वाले प्रयोग के दृष्टिकोण से डी एन ए की गुणवत्ता भी बहुत उत्तम थी । बीजों को ताजा रूप में एकत्र करने तथा उनका शीत संरक्षण (क्रायोप्रिज़र्वेशन) करने की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए पादपों से कुल जीनोमिक डी एन ए का निष्कर्षण करने हेतु ये बेहतर विकल्प हो सकते हैं ।

बेलगांव में हैज़ा के प्रकोप का अध्ययन

जून-अगस्त 2010 के दौरान बेलगांव में अतिसारीय रोगों का एक प्रकोप हुआ । इस केन्द्र ने प्रकोप का अध्ययन करने तथा प्रकोप की पहचान करने में स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों को प्रयोगशाला सुविधा एवं अन्य विशिष्ट सेवाएं प्रदान की । बेलगांव आयुर्विज्ञान संस्थान (BIMS), जिला स्वास्थ्य अधिकारी और क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के दल ने प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया, विभिन्न स्रोतों से पेयजल के 8 नमूने एकत्र किए तथा प्रयोगशाला में जांच के लिए रोगियों से मल नमूने प्राप्त किए । पेयजल का केवल एक नमूना छोड़कर शेष सभी नमूने गंभीर रूप से संदूषित पाए गए । इस प्रकोप के लिए जिम्मेदार कारक के रूप में *विब्रियो कॉलेरी* 01 सीरोटाइप ओगावा, बायोटाइप El Tor की उपस्थिति की पुष्टि की गई । रोगियों के मल नमूनों से रोगजन (पैथोजन) के बहु जीनोटाइप्स पृथक किए गए जिससे इस संभावना का संकेत मिला कि यह प्रकोप शायद पहले से ही मौजूद स्थानिक रोग के तेजी से उभर आने के कारण हुआ था। सभी आइसोलेट्स टेट्रासाइक्लिन के प्रति प्रतिरोधी थे, सरकारी अस्पतालों में इसके इलाज के लिए यह दवाई दी जाती है । सुग्राह्यता पैटर्न सहित विस्तृत विवरण अधिकारियों को भेज दिया गया और उसी के अनुसार चिकित्सा विधान को परिवर्तित किया गया । अगस्त, 2010 तक यह प्रकोप समाप्त हो गया । बेलगांव से सूक्ष्मजीवविज्ञानी और आण्विक स्तर पर हैजे की पुष्टि का प्रथम प्रमाण था, जिसके आधार पर इस क्षेत्र में हैजे पर बेसलाइन सूचना तैयार की गई । इससे बेलगांव में हैज़े के इलाज में टेट्रासाइक्लिंस (सरकारी स्वास्थ्य सुरक्षा प्रणाली में मानक उपचार के रूप में प्रयुक्त) की प्रभावहीनता भी प्रदर्शित हुई । जिसके आधार पर स्थानीय अधिकारियों को चिकित्सा विधि को बदलने में सहायता मिली ।

भावी लक्ष्य

बेलगांव स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र ने अपनी कार्यात्मक उपस्थिति के पांच वर्ष पूरे कर लिए हैं, और प्रत्येक वर्ष इस केन्द्र के मूलभूत ढांचे में अनेक नवीन विषयों को सम्मिलित किया जा रहा है । हाल ही में ऊतक और कोशिका संवर्धन प्रयोगशालाओं और जन्तु प्रयोग सुविधाओं ने कार्य करना आरंभ कर दिया है । आशा है शीघ्र ही मुख्य प्रयोगशाला और कार्यालय भवन का निर्माण हो जाएगा ।

जनशक्ति (मैन पावर) और सुविधाओं के संदर्भ में सीमित संसाधनों के बावजूद इस केन्द्र ने हर्बल औषध अनुसंधान के क्षेत्र में अपनी पहचान बना ली है । यह केन्द्र भावी कार्य विस्तार के प्रति

जागरूक है और राष्ट्रीय हर्बल औषध अनुसंधान केन्द का दर्जा प्राप्त करने की दिशा में कठिन परिश्रम कर रहा है । इस केन्द्र की योजना अपनी गतिविधियों को नवीन विषयों में विस्तारित करने और कुछ महत्वपूर्ण रोगों पर केन्द्रित करने की है । इन सभी प्रयासों के साथ, यह आशा की जाती है कि हर्बल विधि से इलाज करने की हमारी प्राचीन सम्पदा की वैधता स्थापित करने तथा जन साधारण के कल्याण के लिए हर्बल क्षेत्र में नवीन पहचान विकसित करने में इस केन्द्र का महत्वपूर्ण योगदान होगा ।

संकलनः डॉ सुवर्णा रॉय, वैज्ञानिक 'डी', डॉ हर्षा वी. हेगडे, वैज्ञानिक 'बी', एवं डॉ संजीव डी. स्वोलकुटे , प्रभारी-निदेशक, क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, बेलगांव।
प्रस्तुतिः डॉ के.एन. पाण्डेय, वैज्ञानिक 'ई' एवं डॉ रजनी कान्त, वैज्ञानिक 'डी', प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली-110029

विकृतिविज्ञान संस्थान–नाम परिवर्तन समारोह एवं संस्थापना दिवस व्याख्यान

दिनांक 2 मई, 2011 को परिषद के नई दिल्ली स्थित विकृतिविज्ञान संस्थान (वर्ष 1965 में संस्थापित) को इसके 44वें संस्थापना दिवस के अवसर पर इसका 'राष्ट्रीय विकृतिविज्ञान संस्थान' के रूप में नामकरण किया गया। इस अवसर पर सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच ने नई दिल्ली स्थित सफदरजंग अस्पताल परिसर में स्थित इस संस्थान के नवीन नामकरण की औपचारिक पट्टिका का अनावरण किया। इसके अलावा संस्थान के भवन का नामकरण 'श्रीरामाचारी भवन' के रूप में किया गया।

इस अवसर पर नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय प्रतिरक्षाविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ अवधेश सुरोलिया ने श्रीमती पुष्पा श्रीरामाचारी फाउण्डेशन दिवस व्याख्यान दिया। डॉ कटोच ने प्रतिष्ठित वक्ता को स्मृति चिन्ह भेंट किए और लेबोरेटरी टेकनीक (वाल्यूम 2) एवं पब्लिकेशंस डाइरेक्टरी ऑफ एन आई ओ पी नामक दो दस्तावेज़ों का विमोचन भी किया ।

विकृतिविज्ञान संस्थान की पूर्व निदेशक डॉ भानु अयंगर तथा प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक एवं संस्थान की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की अध्यक्ष डॉ इंदिरा नाथ ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इनके अतिरिक्त परिषद मुख्यालय के असंचारी रोग प्रभाग की प्रमुख डॉ बेला शाह, वित्तीय सलाहकार श्री संजीव दत्ता एवं प्रशासनिक प्रमुख श्री अरुण बरोका की भी इस कार्यक्रम में उपस्थिति रही। इस अवसर पर आमंत्रित अतिथियों के अतिरिक्त संस्थान के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों की भी उपस्थिति रही।

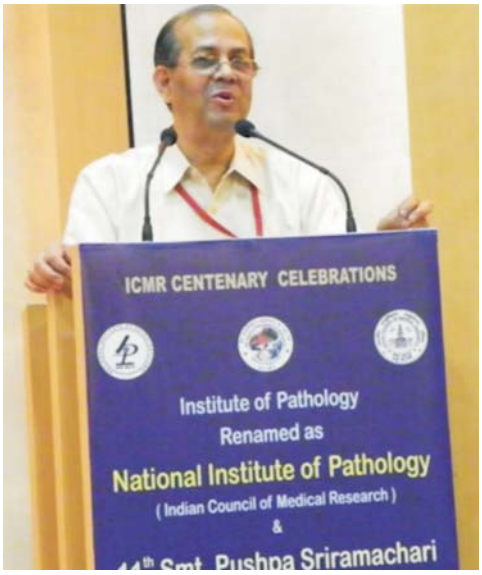

विकृतिविज्ञान संस्थान का नाम राष्ट्रीय विकृतिविज्ञान संस्थान के रूप में परिवर्तित किया गया, नाम परिवर्तन के अवसर पर संबोधित करते हुए सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर डॉ विश्व मोहन कटोच

परिषद के समाचार

परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की निम्नलिखित बैठकें नई दिल्ली में सम्पन्न हुईं:

मानव सहभागियों को सम्मिलित करते हुए जैवआयुर्विज्ञान एवं स्वास्थ्य अनुसंधान (एथिकल, वैधानिक, सामाजिक पहलुओं का नियमन) की बैठक	29 मार्च, 2011
MAC रजिस्ट्री हेतु टास्क फोर्स दल की बैठक	29 मार्च, 2011
दिल्ली, पंजाब में थैलासीमिया पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स दल की बैठक	4 अप्रैल, 2011
जन्मजात एड्रीनल हाइपरप्लाज़िया हेतु आईएमडी-नवजात फोर्स बैठकः एक बहुकेन्द्रीय अध्ययन जांच पर टास्क	5 अप्रैल, 2011
रिकेटसियल रोग पर एक टास्क फोर्स दल की बैठक	7 अप्रैल, 2011
चिकित्सीय परीक्षण रजिस्ट्री-भारत की संचालन समिति की तृतीय बैठक	8 अप्रैल, 2011
माइक्रोबीसाइड्स पर चिकित्सीय अनुसंधान की सब-ग्रुप बैठक	8 अप्रैल, 2011
क्वालिटी स्टैण्डर्ड्स ऑफ इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स की टास्क फोर्स बैठक	11 अप्रैल, 2011
मानसिक स्वास्थ्य के अंतर्गत प्रस्तावों के मंगाने की समीक्षा हेतु परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	11 अप्रैल, 2011

प्रमाण आधारित प्रसवकालीन और प्रसवोत्तर सुरक्षा को बढ़ावा देने के माध्यम से मातृ रुग्णता और मर्त्यता को घटाने पर चयन समिति की बैठक	18 अप्रैल, 2011
अर्बुदविज्ञान के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	19 एवं 21 अप्रैल, 2011
भारत में मानव और जंतु ब्रूसिलोसिस के जानपदिक रोगविज्ञान पर आई सी एम आर - आई सी ए आर संयुक्त टास्क फोर्स बैठक	25 अप्रैल, 2011
वेक्टर साइंस फोरम की फॉलोअप बैठक	26 अप्रैल, 2011
बिहार के चयनित जिले में 0-5 वर्षीय बच्चों में एनॉफ्थैल्मिया और अथवा माइक्रोफ्थैल्मिया के जानपदिक रोगविज्ञान पर टास्क फोर्स परियोजना के विशेषज्ञ दल की बैठक	26 अप्रैल, 2011
पूर्वोत्तर परियोजना समीक्षा समिति की बैठक	27 अप्रैल, 2011
मेडिकल इनोवेशन स्कीम की समीक्षा समिति	27 अप्रैल, 2011
मानव सहभागियों पर बायोमेडिकल अनुसंधान (प्रोत्साहन एवं नियमन बिल) की बैठक	28 अप्रैल, 2011

राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों में परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ ए.सी. मिश्रा ने इंफ्लुएंज़ा विषाणुओं तथा वैक्सीन तक पहुंच तथा अन्य लाभों की पेन्डेमिक इंफ्लुएंज़ा तैयारी (PIP) साझेदारी पर सदस्य राज्यों के जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में सम्पन्न ओपेन एन्डेड कार्यकारी दल (OEWG) में भाग लिया (11-15 अप्रैल, 2011)।

कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'सी' डॉ ए.के. मुखोपाध्याय ने विब्रिओ जीवों को आइसोलेट करने, पहचान करने एवं भण्डारण करने के लिए जंजीबार पर नवनिर्मित 2 प्रयोगशालाओं में वर्तमान प्रैक्टिसेस गुणवत्ता नियंत्रण एवं गुणवत्ता आश्वासन के आकलन के लिए जंजीबार, तंज़ानिया में सम्पन्न बैठक में भाग लिया (11-16 अप्रैल, 2011)।

मुम्बई स्थित आंत्रविषाणु अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ जे.एम. देशपाण्डे ने डब्ल्यू एच ओ मुख्यालय, जेनेवा में सम्पन्न पोलियो अनुसंधान समिति की बैठक में भाग लिया (14-15 अप्रैल, 2011)।

नई दिल्ली स्थित विकृतिविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ पूनम सलोत्रा ने वुडशोल, एम ए, यू एस ए में सम्पन्न ''15वीं वार्षिक वुड्शोल प्रतिरक्षापरजीवीविज्ञान'' बैठक में भाग लिया (17-20 अप्रैल, 2011)।

जबलपुर स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र की निदेशक डॉ नीरू सिंह ने एशिया-पैसिफिक क्षेत्र में सगर्भता में मलेरिया पर बल देने के लिए जेनेवा, स्विट्जरलैण्ड में सम्पन्न''आर बी एम मलेरिया इन प्रेग्नेन्सी'' (MPWG) कार्यकारी दल की बैठक में भाग लिया (18-20 अप्रैल, 2011)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक 'डी' डॉ नीलिमा मिश्रा, वैज्ञानिक 'बी' डॉ बी. शाही तथा तकनीकी सहायक श्रीमती बीना श्रीवास्तव ने बैंकॉक, थाइलैण्ड में सम्पन्न ''ट्रेकिंग रजिस्टेन्स टू आर्टीमिसिनिन कोलेबोरेशन (TRAC) प्रोटोकोल'' पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया (20-22 अप्रैल, 2011)।

मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ एल.एस. सावरडेकर ने वेस्टर्न इंस्टीट्यूश्नल रिव्यू बोर्ड (WIRB) फेलो-IRB समिट के डेगू, कोरिया में सम्पन्न प्रशिक्षण सत्र में भाग लिया (21-23 अप्रैल, 2011)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ जी.बी. रेड्डी ने माउस (मूषक) इलेक्ट्रोरेटिनग्राफी में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन मेडिकल स्कूल, मिशिगन, यू एस ए को प्रस्थान किया (21 अप्रैल से 10 मई, 2011)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ आर.सी. धीमान ने लुसेन, स्विट्जरलैण्ड में सम्पन्न संक्रामक रोगों पर इण्डो-स्विस संगोष्ठी में भाग लिया (2-3 मई, 2011)।

कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ समीरन पाण्डा ने यूनाइटेड नेशन्स ऑफिस ऑन ड्रग्स ऐण्ड क्राइम (UNODC) कार्यक्रम के ''आउट रीच'' एवं पॉज़िटिव लिविंग पर नेपाल में सम्पन्न कार्यक्रम में भाग लिया (क्रमशः 29 अप्रैल, 2011 से 1 मई, 2011 तथा 3-5 मई, 2011)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ ए. लक्ष्मैया ने मौलिक आनुवंशिकी एवं जीनोमिक्स तथा जेनिटिक (आनुवंशिक) सम्बद्ध अध्ययनों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा ब्रिस्टल विश्वविद्यालय एवं लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एवं ट्रॉपिकल मेडिसिन, यू.के. के वैज्ञानिक के साथ लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एवं ट्रॉपिकल मेडिसिन, यू.के. में सम्पन्न इन्ट्रेक्टिव सत्र में भाग लिया (22 मई से 4 जून 2011)।

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87